International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 04(II), October - December, 2023, pp. 87-94

कागजी पॉटरी (टेराकोटा) का अद्भुत कलाकार (ओमप्रकाश गालव)

डॉ. कृष्णा महावर*
आयशा परवीन**

सार

मिट्टी का महत्व सदा से ही रहा है। इसका प्रयोग दैनिक आवश्यकता की पूर्ति तो करता ही है, साथ ही हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार में इसकी उपयोगिता रहती है। पुरातन काल से कई ऐसे उदाहरण हमारे बीच मौजूद है जिससे उस समय की जीवन शैली का परिचय तो होता ही है व वैज्ञानिक अध्ययन का भी प्रमुख आधार रहा, आगे भी जारी है। माटी की इस कला को राजस्थान के विभिन्न ग्रामीण अंचलों में कुम्हारों ने अपने पूर्ण महत्व के साथ जीवित रखा हैं। भले ही इस कार्य में उन्हें अपनी आवश्यकता से भी कम पूर्ति क्यों ना हो ऐसे ही कलाकार है रामगढ़ के ओम प्रकाश गालव। जिन्होंने अपने दादा – परदादा की पुश्तैनी कागजी पॉटरी को आज तक जीवित किया है व भविष्य में भी जीवित रखने की लालसा लिए नित– नए प्रयोग करने में सृजनरत हैं। कई सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से प्रशिक्षण दें उन्हें रोजी–रोटी कमाने का मार्गदर्शन दिया है। देश–विदेश में कई प्रदर्शनियां लगा चुके गालव अपनी कला का देश ही नहीं विदेश में भी परचम लहरा चुके हैं। इन्हें कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मानो से सम्मानित भी किया जा चुका है वैसे तो पूरे रामगढ़ में टेराकोटा का कार्य होता है परंतु कागजी पॉटरी (टेराकोटा) का कार्य केवल इनका परिवार ही करता है। तथा इस कार्य में घर की महिलाओं का सहयोग रहता है।

शब्दकोशः *मृण्मूर्ति, प्रस्तरशिल्प, कागजी पॉटरी (टेराकोटा), मिनिएचर पॉटरी।*

प्रस्तावना

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक शोध पद्धति सर्वेक्षण, अनुसंधान, विकासात्मक अध्ययन, ऐतिहासिक अनुसंधान के साथ शोध के कार्य विभिन्न उपकरणों अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली विधि के साथ प्राथमिक व द्वितीय स्रोतों का भी अध्ययन किया गया है।

ओमप्रकाश गालव

* असिस्टेंट प्रोफेसर चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोधार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

माटी धरती की सुगंधि है। जन्म से मरण तक मानव उससे अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। इसलिए कला की प्रथम अभिव्यक्ति का माध्यम मिट्टी बनी। सिंधु सभ्यता से लेकर आज तक देवी – देवताओं की मृण्मयी मूर्तियां, बर्तन भांडे, खिलौने, आभूषण, मनके व मोहरे मानव के कलात्मक बोध और उसकी परिष्कृत अभिरुचि से परिचय कराते हैं। इनका 5000 वर्षों का इतिहास हैं। सभ्यता के उदय के साथ हजारों वर्षों तक ही नहीं बल्कि वर्तमान तक यह कार्य जारी है (सुजस, 14)।

आधुनिक एवं भौतिक विकास के चरमोत्कर्ष पर पहुंची मानव सभ्यता की प्रगति का रास्ता मिट्टी से होकर ही गुजरा हैं। वैज्ञानिक खोजों तथा अविष्कारों के मूल में मिट्टी के महत्व को कभी नकारा नहीं जा सकता। पुरातन काल में मिट्टी से खेलने वाले अज्ञात शिल्पियों और हस्त कारीगरों की अनूठी कला कृतियां मानव सभ्यता की खोज तथा उत्खनन में प्राप्त हुई। राजस्थान में विशेषकर ग्रामीण अंचलों में लोक संस्कृति एवं परंपराओं के अनुरूप मिट्टी से दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं का निर्माण कर हस्त कारीगरों ने रोजी–रोटी का साधन ढूंढा। भूगर्भ से वर्षों पुरानी मिट्टी को निकाल अपने निर्मम हाथों व चमत्कारिक उंगलियों से न जाने कितने प्रयोग कर डाले। इतना ही नहीं हस्त कारीगरों ने प्राकृतिक प्रकोपों के बावजूद प्राचीन काल से ही मिट्टी की कला को जीवित रखा तथा इस कला को घरेलू कुटीर उद्योग के रूप में अपनाकर जीविकोपार्जन का मुख्य आधार बनाया। (सुजस 34)

"महात्मा गांधी का सपना था कि गांव का व्यक्ति स्वावलंबी बने उनका मानना था कि जिस देश का कुटीर उद्योग सुदृढ़ होगा उस देश की अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होगी" (सुजस, 11)

अपने दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कुम्हार जाति के सिद्धहस्त कारीगर पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला को अपनाते हुए रोजी–रोटी कमा रहे हैं। कभी मिट्टी को भिगोकर, कभी पैरों से रोंधते तो कभी अपनी कलात्मक उंगलियां या कभी चाक के सहारे नित – नए प्रयोग कर अपनी अलग ही पहचान बनाई हैं। (सुजस, 34)

अरावली की ऊंची–नीची श्रंखलाओ की गोद में जयपुर शहर की चमक – दमक से 172 किलोमीटर दूर बसा छोटा सा शहर अलवर जिससे 25 किलोमीटर दूर स्थित कस्बा रामगढ़ अपने मृणशिल्पों के लिए दूर–दूर तक ख्याति अर्जित कर रहा है (शर्मा, 91)। जगदीश सिंह गहलोत ने राजपूताना का इतिहास तृतीय भाग पृ. संख्या 245 में लिखा है कि इस गांव का नाम यहां के चमार मुखिया भोज के नाम पर भोजपुर रखा। ईस्वी 1746 में पदम सिंह नरूका को यह जागीर मिली तब उसने यहां गढ़ बनवाया और इसका नाम रामगढ़ रखा। ईस्वी वर्ष 1777 में यह अलवर राज्य के कब्जे में आई तब से यह तहसील मुख्यावास है। तहसील में 65ः मेव जाति (गहलोत, 245) बसी है।

अलवर–दिल्ली राजमार्ग पर स्थित होने तथा अपनी भौगोलिक स्थितियों के कारण यह कस्बा प्रारंभ से ही कला–कौशल तथा व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा (शर्मा, 91)। अकेले रामगढ़ में करीब 60–70 कुम्हारों के घर हैं और करीब 300 लोग इस शिल्प कला से सीधे जुड़े हैं। हर कला की अपनी एक अलग पहचान है कुम्हारी ऐसी कला है जहां पुरुष ही नहीं स्त्रियां अर्थात् पूरे परिवार के बिना यह कार्य संभव नहीं। एक कहावत है एकला खाती, दूजा लुहार सब कुणवे से पचे कुम्हार अर्थात् खाती अकेला ही अपनी काष्ट कला को संपन्न करता है तथा दो लोहार मिलकर लुहारी कार्य पूरा करते, किंतु कुम्हारी ही ऐसी कला है जिसमें पूरे परिवार को लगना पड़ता है।

निर्मम कुम्हार की थापी से कितने रूपों में कुटी, पिटी
हर बार बिखेरी गई किंतु मिट्टी फिर भी तो ना मिटी
मिट्टी की महिमा मिटने में मिट मिट हर बार सवरती है
मिट्टी मिट्टी पर मिटती है मिट्टी मिट्टी को रचती है।

https://m-hindi.webdunia.com/

राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि न केवल शौर्य, साहस और पराक्रम की अनूठी गाथाओं से परिपूर्ण है बल्कि कला एवं शिल्प की थाती से भी समृद्ध है। लोक व हस्तकलाओं में तो राजस्थान का कोई सानी नहीं, संगीत हो या नृत्य काष्ठ शिल्प, प्रस्तरशिल्प, धातु शिल्प, साहित्य हो या माटी शिल्प सभी में राजस्थानी शैली परंपरा और संस्कृति की झलक नजर आती (सुजस, 888)।

राजस्थान की माटी ने अनेक ऐसे शिल्पियों को अपना गौरव प्रदान, जिन्होंने अपनी कला प्रतिभा से सृजन के नए–नए आयाम उद्घाटित किए हैं। अलवर जिले में बसा छोटा सा कस्बा रामगढ़ जहां शांत सी गली में बना ओमप्रकाश गालव का घर 'रामगढ़ क्ले पॉटरी के नाम से जाना जाता है। आज यह नाम ही इनकी पहचान है। इन्होंने अपनी माटी की कला का परचम देश, ही नहीं विदेश में लहरा ख्याति अर्जित की। साथी ही विदेशियों को अपनी इस सरजमीं पर आने के लिए आकर्षित किया उनके परदादा पहलवान लल्लूराम, दादा सोहनलाल और पिता फतेहराम भी मिट्टी की कला में पारंगत ही नहीं, कई पुरस्कारों से सम्मानित भी थे।

रामगढ़ में मिट्टी की कला का कार्य प्राचीन काल से ही जारी है, वह प्रसिद्ध भी है। ओमप्रकाश गालव के परदादा लल्लूराम जी ने कुछ डिजाइनर उत्पाद बनाएं– जैसे मिट्टी की प्रेस, केसरोल (कटोरदान) मिट्टी का हुक्का आदि आज भी सुरक्षित अवस्था में इनके स्टूडियो में मौजूद है। हुक्के के लिए अलवर के महाराजा जयसिंह ने प्रेरित होकर इन्हें पुरस्कृत भी किया था। ओमप्रकाश गालव के पिता ने 1970 में कागजी पॉटरी का कार्य शुरू किया। इसके लिए इन्हें 1989 का राज्य दक्षता पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। उन्होंने अनेक कुम्हारों को यह कला सिखाई जिससे आज वह सब अपनी रोजी–रोटी चला रहे हैं। इनकी कलाकृतियां वजन में हल्के होने के कारण ही महाराज जयसिंह ने इन कलाकृतियों को 'कागजी' नाम दिया। अपनी 15वीं पीढ़ी में 30 जुलाई 1983 को ओमप्रकाश गालव का जन्म फतेहराम प्रजापत के घर हुआ। कलात्मक पारिवारिक माहौल होने का प्रभाव उनके ऊपर भी बचपन से ही रहा परंतु आर्थिक स्थिति ठीक न रहने के कारण यह कागजी कला कहीं विलुप्त सी होती नजर आ रही थी। ऐसी स्थिति में एक तरफ अपनी पुश्तैनी कला को बचाने की जिम्मेदारी तो दूसरी तरफ पारिवारिक स्थिति थी। ऐसी दशा में ओमप्रकाश गालव ने दसवीं कक्षा तक की अपनी पढ़ाई के बाद घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के करण इस काला में जुड़ना पड़ा। कला को बचाने में लीन हो गये। पांच भाइयों के परिवार में सबसे बड़े हैं– ओमप्रकाश गालव एकदम शांत स्वभाव के केवल मन में यही कि कब अपनी इन कलात्मक उंगलियों मात्र से कुछ नया इतिहास गढ़ देने की लालसा मन में सदैव लिए रहते हैं।

अपने परिवार की पुश्तैनी कला को गालव ने विदेशों में भी पहचान दिलाई हैं। इनके छोटे भाई अनिल कुमार प्रजापत (नेशनल मेरिट अवार्ड) चेतन प्रजापत, ईश्वर प्रजापत (क्राफ्ट काउंसिल भारत का युवा पुरस्तकार व प्ब्क का सुरेश नेओटिया पुरस्तकार) व करन सिंह (कमला पुरस्कार) भी इनके सानिध्य में ही कार्य कर रहे हैं। ओमप्रकाश गालव का कहना है कि वह अपनी कला के द्वारा पुरातन पारंपरिक शिल्पों को नया रूप देना चाहते। अपने कलात्मक उपकरणों के विषय के बारे में कहते हैं की महीनों की सृजनात्मक कल्पना जब बाहर निकल कर आती है तो उसे बनाने में 1 या 2 दिन या 15 दिन का समय लग जाता है। इसके साथ ही पुराने समय में मिट्टी के बर्तन में जो खाना बनता था वह स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता था। धीरे–धीरे इनकी महत्त्वता कम होती गई इनकी जगह सिल्वर, प्लास्टिक व फाइवर के बर्तनों ने ले ली। इसे देखते हुए एक बार फिर पारंपरिक शिल्पों को नया रूप देने में कार्यरत हैं यह मॉडर्न किचन के अनुसार ही बनाए जा रहे हैं इनमें किसी तरह की मिलावट नहीं है साथ ही स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक नहीं है बस इतना है कि इन उत्पादों का मूल्य सामान्य उत्पादों से अधिक है। यदि किसी व्यक्ति को अपने अनुसार कुछ बनवाना है तो वह कार्य भी कर देते है। सन् 2001 से इन्होंने विभिन्न संस्थाओं राजस्थान चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स, जिला उद्योग केन्द्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, उत्तरप्रदेश की विभिन्न सरकारी संस्थाओं के साथ ही हरियाणा व उत्तराखण्ड में प्राईवेट प्रशिक्षण दिया।

आमेप्रकाश गालव ने नीदरलैण्ड, इंग्लैण्ड, स्वीडन, नेपाल, पेरिस व सांता फे (मेक्सिको सिटी) आदि की यात्रा की व अपने कार्य का भी प्रदर्शन किया। https://www.gaonconnection.com/

मिट्टी

ओमप्रकाश गालव का कहना है कि रामगढ़ में मिट्टी, खेतों और तालाबों से ही आती है। परंतु अब मिट्टी की कमी हो गई है। जिस तरह की मिट्टी की इन कलाकारों को जरूरत होती वह रामगढ़ में तो नहीं है 10 से 80 के क्षेत्र से डूंगरपुर से आती थी अलवर के प्रताप बांध की मिनिएचर पॉटरी हेतु उपयुक्त होती थी परंतु 7–8 साल से यह बंद हो गई। रामगढ़ से 10–15 किलोमीटर दूर राजगढ़ व फिरोजपुर के पास तालाबों से प्राप्त मिट्टी बर्तनों हेतु उपलब्ध हो जाती। इनमें सैंथली और सरेटा गावों की मिट्टी अधिक उपयुक्त रहती है। सैंथली की मिट्टी काली होने से उसमें चिकनाई अधिक होती व लचीलापन होने से सफाई भी अधिक आती है। इससे एवम् सजावटी वस्तुएं अधिक बनाई जाती है। बरतन तथा हुक्के की चिलम आदि बनाने के लिए सरेटा गांव के खेतों की मिट्टी काम में ली जाती। गालव का कहना है कि हमारे यहां जो मिट्टी काम में ली जाती है(शर्मा, 1992)। उसमें किसी तरह की मिलावट नहीं है। इनसे बने बर्तन एकदम शुद्ध है जैसे मौलेला में टेराकोटा टाइल्स बनाने हेतु गधे की लीद मिलाते हैं व कई कुम्हार अपने उत्पादों को बेचने के लिए जो मशीन पर उपकरण बनाते हैं उसमें ऑक्साइड मिलाते हैं। मिट्टी की एक समस्या यह भी है कि सरकार द्वारा चलाई जा रही मनरेगा योजना के कारण काम लायक मिट्टी तालाबों में खत्म हो गई है। कलाकार का कहना है अच्छे व कलात्मक अलंकरण हेतु करीब 10–15 साल पुरानी तालाब की मिट्टी ऐसा तालाब जहां किसी तरह का कार्य नहीं हुआ हो की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में ओमप्रकाश गालव का कहना है कि सरकार इस समस्या का जल्द निवारण करें, हर ग्रामीण इलाके में एक तालाब व सवाई चक जमीन जो सरकार के अधीन है। प्रजापति समाज के लिए खास तौर पर आवंटित करें। यही इनकी रोजी–रोटी चलाने का एकमात्र साधन हैं।

औजार

ओमप्रकाश गालव कहते हैं इन्हें अपने कार्य हेतु जिन हजारों की आवश्यकता होती है। वह स्वयं के द्वारा ही निर्मित किए जाते हैं। व नाम मात्र के हैं जैसे– छोलना, खींचपती कबूली, घोटना, पिंडी थापी आदि। ये औजार लोहे, पत्थर व लकड़ी के बने होते हैं। छोलना लोहे का बना होता है, इसका कार्य उपकरण पर लगी अतिरिक्त मिट्टी हटाने व अलंकरण कार्य जैसे जाली, कंगूरे आदि काटने हेतु प्रयोग होता है यह तिकोना व चाकूनुमा दोनों प्रकार का होता है चाकूनुमा को 'कलम' भी कहते। खींचपति अपने ही प्रकार का लोहे का औजार है यह मिट्टी को खींचकर डिजाइन डालने के काम आता है। कबूली खराद उपकरण है यह अतिरिक्त मिट्टी को हटा कलाकृतियों को एकसार रूप प्रदान करता है। घोटना चिकनी सतह का पत्थर है, यह चाक पर रखे उपकरण में चमक लाने के लिए घुटाई हेतु प्रयुक्त होता है। पीड़ी पत्थर का बना होता है यह आकार बढ़ाने में काम आता, थापी लकड़ी बना तथा प्रमुख रूप से मटका आदि बनाने में प्रयुक्त होता है पिंडी और थापी बड़े–बड़े उपकरणों का आकार प्रदान बढ़ाने में प्रयोग आते हैं।

मिट्टी तैयार करना

ओमप्रकाश गालव बताते हैं की मिट्टी को सर्वप्रथम धूप में सुखाकर उसे लकड़ी की मोगरी से कूट पीट कर बारीक कर लिया जाता है। इसके बाद उसे लोहे की बारीक चलने से छान लेते हैं जब यह छानकर तैयार होती है तो इसे चूनी कहा जाता है। इसे अलग एकत्र कर चालने में जो मिट्टी रह जाती है उसे वह हारे में डालकर पानी में भिगो देते हैं। हारे में भीगी मिट्टी जब पूरी तरह भीग जाती है तो उसमें पानी मिलाकर पतला घोल तैयार कर उसे छलना से छान लेते हैं इस प्रक्रिया में वह मिट्टी में जो कंकर होते हैं उसे अलग कर देते हैं। यह छना हुआ पतला गोल दुकान में गोल के लिए बनाए चौकोर कुंडे में गाढ़ा होने के लिए डाल दिया जाता। 2–3 दिन में यह घोल गाड़ा हो जाता है इसे पॉलिथीन में ढककर रखने से मिट्टी गीली रहती है उसमें सुखे कण फूल जाते हैं इस पूरी प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका घर की महिलाओं की होती है घर की महिलाएं ही मिट्टी तैयार करती है जब जाकर यह कलाकार अपना चाक चलाते है। ओमप्रकाश गालव बताते हैं कि पहले इनकी मां हीरा देवी बर्तनों पर डिजाइन डालने में सहायता करती थी इसके लिए उन्हें राज्य स्तरीय सामान भी मिल चुका है परंतु वे अब यह कार्य तो नहीं करती मिट्टी को तैयार करती है।

कागजी पॉटरी

कागजी पॉटरी (टेराकोटा) जिसके लिए आज ओमप्रकाश गालव भारत देश ही नहीं विदेश में अपनी पहचान बना रहे हैं इस कागजी पॉटरी (टेराकोटा) के नाम पर ही रामगढ़ को प्राचीन समय से जाना जाता। साथ ही लोग कई बार कागजी पॉटरी नाम के कारण गुमराह हो जाते हैं शायद कागज की बनी पॉटरी होगी। परंतु इसके बिल्कुल विपरीत मिट्टी से बनी होती है यह वजन में इतना हल्का होता है जैसे कोई कागज से बना उपकरण हो इसके लिए सैंथली खदान की मिट्टी काम में ली जाती है। ओम प्रकाश गालव बताते हैं कि इस कार्य हेतु आपको इस कला में पारंगत होना जरूरी है साथ ही पूरे संयम और सूक्ष्म निरीक्षण की आवश्यकता होती है आपकी छोटी सी गलती से पूरी कलाकारी बिगड़ सकती है ओम प्रकाश गालव उदाहरण देते हैं कई ऐसे युवा कलाकार है जो बाजार की मांग के अनुसार कॉपी कर भारी लाभ कामना चाहते हैं। उन कलाकारों के लिए गालव का कहना है कि यदि वह इस कार्य को कर रहे हैं तो इसे न केवल धन कमाने का जरिया माने बल्कि इसकी गहराई तक जाकर पूरे तन व मन से कार्य करे। जब कलाकृति बनकर तैयार हो जाती है तो उसे धागे से काटकर अलग अलग कर कबूली से खराद की जाती है ताकी बर्तन की परत और पतली हो जाए घोटने से घुटाई कर चिकना किया जाता है व 'कलम' से उसकी डिजाइन (जाली) काटी जाती हैं। यह कार्य सावधानी से किया जाता है(100)।

चाक पर मिनिएचर पॉटरी

ओमप्रकाश गालव ने यह कार्य 2011 से शुरू किया तथा वे कहते हैं कि इनका प्रिय विषय है व इसे प्रमुखता से बनाते हैं। नित नए प्रयोग करते रहते हैं कहते हैं इस कार्य के लिए उन्हें अपने श्वास पर पूरा नियंत्रण रखना होता है। बानी मिट्टी मिनिएचर पॉटरी के लिए उपयुक्त रहती है। मिनिएचर पॉटरी में 2 एम.एम से 5 एम.एम तक की मिनिएचर पॉटरी बनाई जाती है। यह कभी–कभी 1–2 सेंटीमीटर तक के मिनिएचर पॉट भी बनाते हैं। यदि यह गलती से भी हिल जाए तो पूरा पात्र नष्ट हो जाता है (शर्मा 102)।

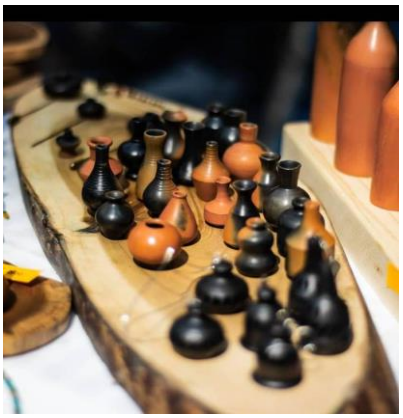

बड़े आकार के पात्र

बड़े आकार के पात्र एक बार में नहीं बनायें जा सकते। इसके लिए सर्वप्रथम 4 फीट तक ऊंचे तथा 20 इंच चौड़े मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए चाक पर करीब 17 इंच ऊंचा गमलेनुमा पात्र बनाया जाता है इसे कुंडी कहते हैं। इसके थोड़ा कठोर हो जाने पर पहले वाला गमला बनाते हैं इसकी दो किनारी बना पहले वाले गमले पर उल्टा रखकर एक किनारी अंदर एक बाहर तथा हाथ से जोड़ को मिटा देते हैं। चलते चाल पर रख उसे मनचाहा आकार दिया जाता है थापी व पिंडी से ठुकाई कर कबूली से खराद घोटने से घुटाईं की जाती। भट्टी में पकने से पहले इन उपकरणों को बानी (छनी हुई मिट्टी/मुर्रम पहाड़ की) के पतले घोल में डुबोकर बाहर निकाल दिया जाता है और धूप में सूखने के लिए रख दिया जाता है इसके बाद हल्के गीले सूती कपड़े से इसकी अच्छी तरह घिसाई की जाती है इस प्रक्रिया को मगसना कहते हैं। इस क्रिया से बर्तन को बानी के घोल में डुबो देने से सतह की जो चमक कम हो गई थी यह पुन वापस आ जाती है। बर्तन मगसना के बाद धूप में रख दिया जाता है इसके बाद बर्तन को भट्टी में 5 से 8 घंटे पकाया जाता है (शर्मा, 99)। ओम प्रकाश गालव का कहना है कि इनके बनाएं उत्पाद पूरी तरह प्राकृतिक है तथा इनका रंग भी फायरिंग में ही किया जाता है। यह प्रायः काले, लाल, भूरे तीन प्रमुख रंगों में होता है अभी वर्तमान में व्हाइट पॉटरी पर कार्य भी जारी है। **तथा पूरे रामगढ़ में केवल इनका परिवार ही हैं। जो कागजी पॉटरी का कार्य करता है** उनके उत्पाद ₹10 से शुरू होकर 2 लाख तक के होते है।

भट्टी के प्रकारः– भट्टी दो प्रकार की होती है–

- **मैदानी भट्टी**
- **खड़ी भट्टी**

मैदानी भट्टी जमीन में करीब 2 फीट की गहराई में ढाल देकर बनाया जाता है यह बाहर 12 से 15 फीट की गोलाकार अथवा लंबे अंडाकार की होती है। बर्तन जमाने से पहले भट्टी में 3 से 5 इंच मोटी परत ऊंची लकड़ी के छोटे–छोटे गुटके डालकर फिर उस पर मिट्टी के गिलास उस पर कून्डी व अंत में पकने वाले बर्तन लगाए जाते हैं। भट्टी में चारों तरफ नाले रखे जाते हैं तथा भट्टी में ऊपर भी आग लगाने के लिए एक नाली छोड़ी जाती है आग धीरे–धीरे छोड़ी जाती है फिर तेज कर दी जाती है। बर्तन की पकाई का अंदाजा उसकी लो से करते हैं जब आग लाल होकर सफेद हो जाती है तो भट्टी बंद कर देते हैं (शर्मा ,103)। भट्टी सांयकाल लगाई जाती है ताकि अंधेरे में पकाई का अंदाजा अच्छे से लग जाता हैं। इसके विपरीत खड़ी भट्टी ईंट से बनी होती है यह 3 फीट ऊंची दीवार बनाकर उसमें नालियां छोड़ी जाती है(शर्मा, 104)। परंतु सरकार धीरे–धीरे भट्टियां बंद करवा रही है।

पुरस्कार

ओमप्रकाश गालव को कई राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं इन्हें 2003–04 की जिला स्तरीय हस्तशिल्प प्रतियोगिता में इनका माटीशिल्प पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। वर्ष 2006 में इन्होंने 6 फीट 4 इंच ऊंचा एक कलात्मक मिट्टी का हुक्का बनाकर इस क्षेत्र के माटीशिल्प को नई ऊंचाई प्रदान की। इसके लिए इन्हें 2006 –07 के लिए राज्य दक्षता पुरस्कार दिया गया। वर्ष 2008– 09 में उनके द्वारा बनाए गए 5 फीट 5 इंच ऊंचे मिट्टी के कलात्मक हुक्के को राज्य दक्षता पुरस्कार के लिए चुना गया। 10 फीट ऊंची कोकाकोला की बोतल, 14 फीट ऊंचा हुक्का बनाया तथा मिट्टी की बनाई कोकाकोला बोतल को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में स्थान मिला। विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर इनके 14 फीट ऊंचे मिट्टी के हुक्के को जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल में राज्य के चिकित्सा मंत्री द्वारा स्थापित किया गया। करीब चार क्विंटल मिट्टी से बना हुक्का लोगों के लिए अजूबा बना हुआ है, परंतु अब यह खंडित अवस्था सवाई मानसिंह अस्पताल में है। चाक पर 2 एम.एम से लेकर 5 एम.एम. तक ऊंची मिनिएचर पॉटरी तथा मात्र 2 एम. एम तक के मोटे आयाम प्रदान किए गए। इसके लिए 2010 के भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा हस्तशिल्प का राष्ट्रीय स्तर का सिद्ध शिल्पी पुरस्कार दिया गया। माटी शिल्प में उनके डिजाइन गुणवत्ता ऊंची कीमत एवं परंपरागत डिजाइनों में युगानुरूप बदलाव के लिए इन्हें वर्ष 2014 का यूनेस्को अवार्ड आफॅ एक्सीलेंसी फॉर हैण्डीक्राफ्ट हस्तशिल्प के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार दिया गया। विश्व कला परिषद की ओर से 4 अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके हैं।

उपसंहार

ओमप्रकाश गालव का कहना है कि सरकार कलात्मक कार्य करने वाले कलाकारों को मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना के तहत 3 लाख का कर्ज दिए जाने की घोषणा की है जिसका ब्याज सब्सिडी के रूप में सरकार देती है। साथ ही प्रदेश के बाहर लगने वाले मेले या प्रदर्शनों में शामिल होने वालों को आने–जाने का खर्च और स्टॉल का 50 फीसदी किराया दिया जाता है परंतु बैंक बिना कोई प्रमाणित लिखित दस्तावेज के लोन नहीं देती। ऐसी स्थिति में कारपोरेट घराने ही कला को संरक्षण दे रहे हैं। ऐसा लगता है इनके सानिध्य में कला संरक्षित हो सकती है। सरकार इसके लिए कुछ कदम नहीं उठाती हर 26 जनवरी व 15 अगस्त को राज्य सरकार प्रत्येक क्षेत्र के कलाकारों को सम्मानित करती हैं। परंतु ओमप्रकाश गालव जैसे सिद्ध हस्त कलाकार को राज्य स्तरीय सम्मान से सम्मानित नहीं किया गया तथा रामगढ़ की कागजी कला काफी पुरानी होने के बावजूद जी आई टैग की कमी है सरकार की G–20 जैसी सरकारी प्रदर्शनियों में भी सरकार की तरफ से आमंत्रित नहीं किया जाता। अतः रामगढ़ की कला में सरकारी संरक्षण की कमी ही नजर आती है सरकार को इस क्षेत्र की ओर ध्यान देने की आवश्यकता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अधिकतम समग्री साक्षात्कार द्वार प्राप्त की गई है।
2. राजस्थान सुजस (सूचना एवं जनसंपर्क निर्देशालय), प्रधान सम्पा.– अमर सिंह राठौड़, अगस्त–सितम्बर 1993, वर्ष 2 अंक 5 ,पृष्ठ सांख्य 14
3. राजस्थान सुजस (सूचना एवं जनसम्पर्क निर्देशालय), प्रधान सम्पा.– आशुतोष गुप्त, अक्टूबर, 1998–जनवरी, 1999, पृष्ठ संख्या 34
4. राजस्थान सुजस (सूचना एवं जनसम्पर्क निर्देशालय), प्रधान सम्पा.– आशुतोष गुप्त, द्विमासिक 10 अंक, 5 अगस्त–सितम्बर, पृष्ट सांख्य 11
5. राजपुताना का इतिहास तृतीया भाग गहलोत जगदीश सिंह पृष्ठ संख्या, 245
6. राजस्थान का माटी शिल्प प्रथम संस्करण : 2013, शर्मा, देवदत्त पृष्ठ संख्या–91, 92, 100, 102, 103, 104
7. राजस्थान सुजस (सूचना एवं जनसम्पर्क निर्देशालय), प्रधान सम्पादक– आशुतोष गुप्त, संस्करण–1998 पृष्ट सांख्य–888
8. https://www.gaonconnection.com/badalta-india/ramgarh-clay-pottery-alwar-rajasthan-rajesh-kalav-terracotta-pottery-52174
9. https://m-hindi.webdunia.com/history-and-culture-of-world/terracotta-122051200026_1.html.

❖◆❖